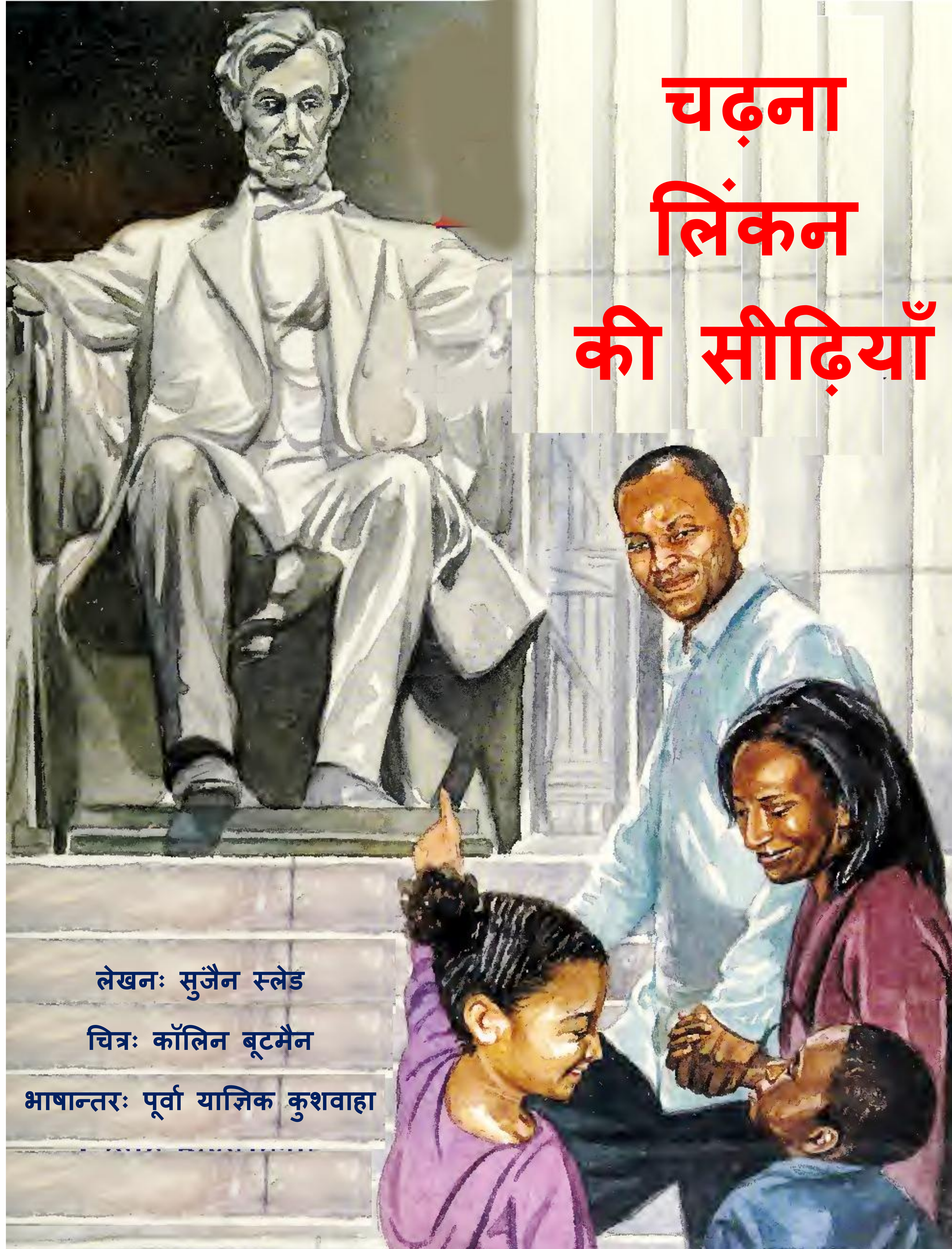
चढ़ना लिंकन की सीढ़ियाँ



लेखनः सुजैन स्लेड

चित्रः कॉलिन बूटमैन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लिंकन स्मारक की संगमरमर से बनी सीढ़ियाँ अफ्रीकी-अमरीकियों के इतिहास के कई महत्वपूर्ण पलों की गवाह रही हैं। जब मेरिएन एन्डरसन को काली होने के कारण कॉन्स्टिटट्यूशन हॉल में गाने नहीं दिया गया, उन्होंने 1939 में इन्हीं सीढ़ियों पर गाया। 1963 में डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने अपना उद्वेलित करने वाला भाषण, 'मेरा एक सपना है' इन्हीं सीढ़ियों पर दिया, जिसने पूरे देश को प्रेरित और एकजुट किया। 2009 में अमरीका के पहले अफ्रीकी-अमरीकी राष्ट्रपति, पद की घोषणा के बाद सबसे पहले यहीं आए।

सुज़ैन स्लेड के सशक्त शब्द तथा कॉलिन बूटमैन के मनोहर चित्र, अफ्रीकी-अमरीकियों की समता की ओर बढ़ने के दौरान आए महत्वपूर्ण पड़ावों को विलक्षण तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

चढ़ना
लिंकन की सीढ़ियाँ



लेखनः सुज़ैन स्लेड

चित्रः कॉलिन बूटमैन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





अब्राहम लिंकन एक महान नेता थे। जब वे 1861 में राष्ट्रपति बने, अमरीका के कई अफ्रीकी-अमरीकी गुलाम थे। लिंकन जानते थे कि गुलमी को जड़ से खत्म करना ही होगा।



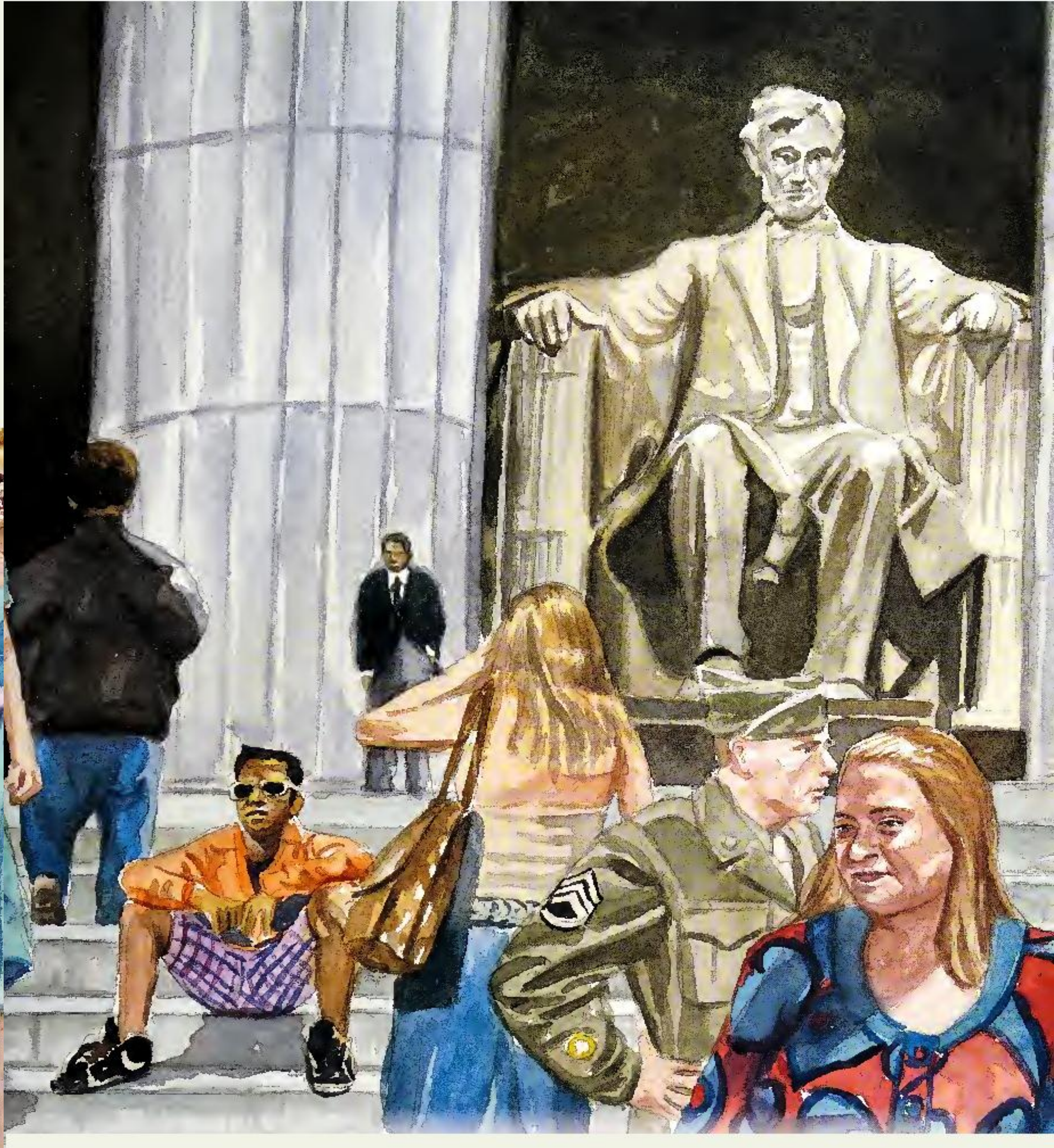
अब्राहम ने अमरीका का उन अंधेरे दिनों में नेतृत्व किया जब देश के उत्तरी भाग के नागरिक, दक्षिण के नागरिकों से लड़े। इस खूनी गृहयुद्ध में 6 लाख अमरीकी मारे गए। अब्राहम को गुलामी खत्म करने के साथ देश को जोड़े रखने का उपाय भी तलाशने थे। उनके निर्भीक व ईमानदार शब्दों ने सभी लोगों की आज़ादी की मांग की।



1863 में अब्राहम ने बदलाव के लिए एक कदम उठाया और आज़ादी के घोषणा पत्र पर दस्तख़त किया। इस दस्तावेज ने हज़ारों गुलामों को आज़ाद किया।

साल गुज़रते गए पर अब्राहम को भुलाया नहीं गया। 1914 में अमरीकियों ने यह तय किया कि लिंकन के सम्मान में वे वॉशिंगटन डी.सी. में एक प्रतिमा बनवाएंगे। उन्नीस फुट ऊँची इस उत्कृष्ट प्रतिमा को सफेद संगमरमर से बने 28 छोटे टुकड़ों को जोड़ कर बनाया गया। जोड़ने से पहले इन टुकड़ों को सावधानी से तराशा गया और किसी विशाल पहेली के तरह जोड़ा गया। 1922 में इसका अनावरण जनता के लिए किया गया। इस स्मारक भवन को लिंकन मेमोरियल कहा जाता है।





तब से अब तक अनेकानेक लोग इन सीढ़ियों को चढ़ कर प्रतिमा को देखने और बदलाव के लिए कदम उठाने से पहले प्रेरणा लेने आते रहे हैं।

वर्ष 1939 है।

चटर-पटर, अब्राहम की प्रतिमा की सीढ़ियों के पास अपने सुंदर कपड़ों में सजे-धजे बच्चे इकट्ठा होते हैं।

क्लिक-क्लिक, उन बच्चों के पीछे महिलाएं हैं, जो वसंत की ठंडी बयार से बचने के लिए अपने कोटों को बन्द किए खड़ी हैं।

धम-धम, टोपियाँ पहने पुरुष अपने चमचमाते जूते पहने संगमरमर की सीढ़ियों पर खड़े हैं।

हर रंग के लोग लिंकन के स्मारक की ओर बढ़ रहे हैं। और भी अनेक प्रतिमा के सामने खुल मैदान में जमा होते जा रहे हैं।

कुल पिचहत्तर हज़ार लोगों की भीड़ जमा है।

ये सब मशहूर ओपरा गायिका मेरिएन एन्डरसन को सुनने आए हैं। मेरिएन का स्वागत राजाओं और रानियों ने किया है, वे राजमहलों में गा चुकी हैं। पर उन्हें वॉशिंगटन डी.सी. के कॉन्स्ट्यिूशनल हॉल में गाने नहीं दिया गया था, क्योंकि वे काली थीं।

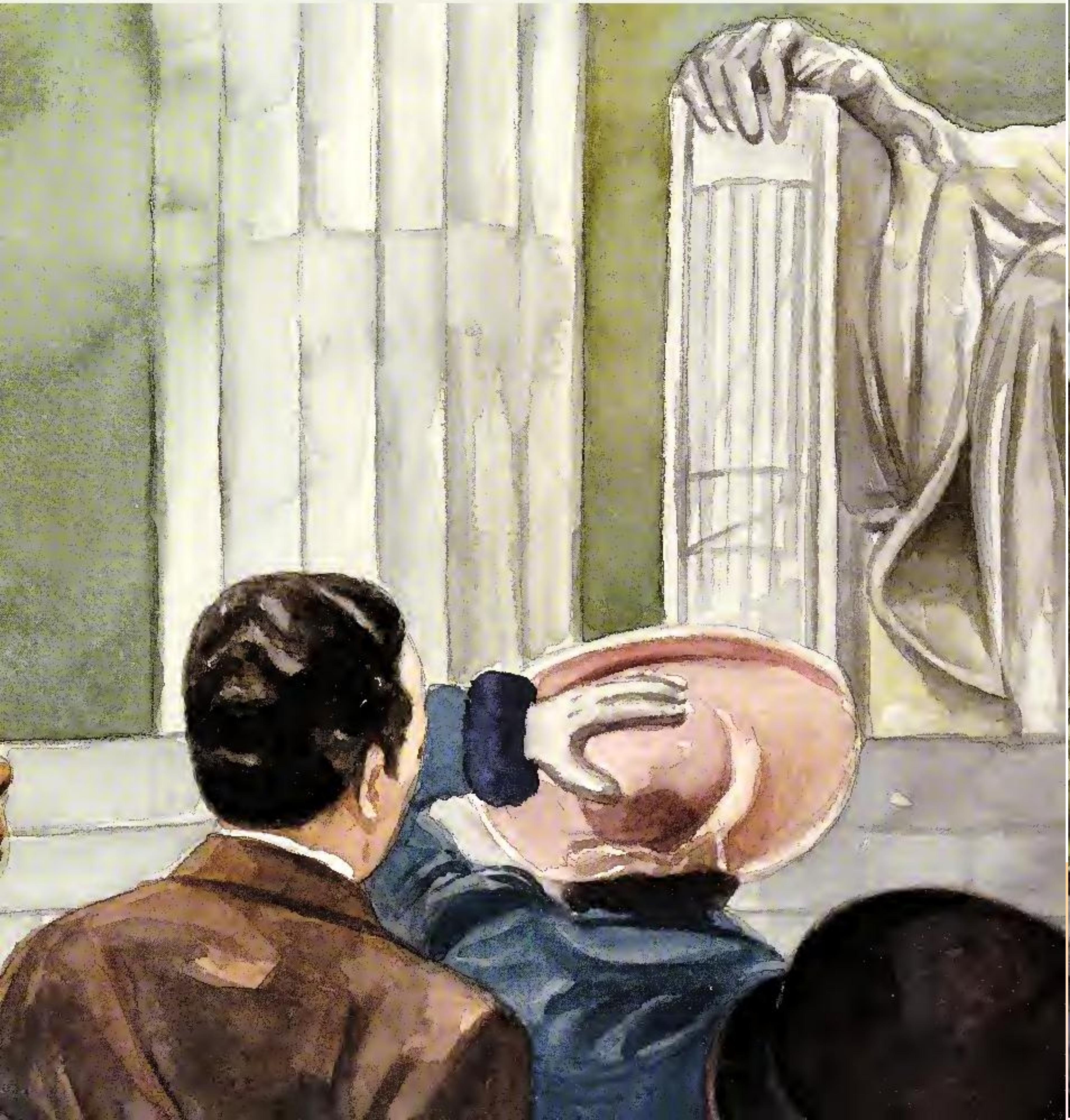
प्रथम महिला एलेनोर रुज़वैल्ट ने आावज़ उठाई। उन्होंने कहा कि मेरिएन को लिंकन मेमोरियल पर गाना चाहिए।

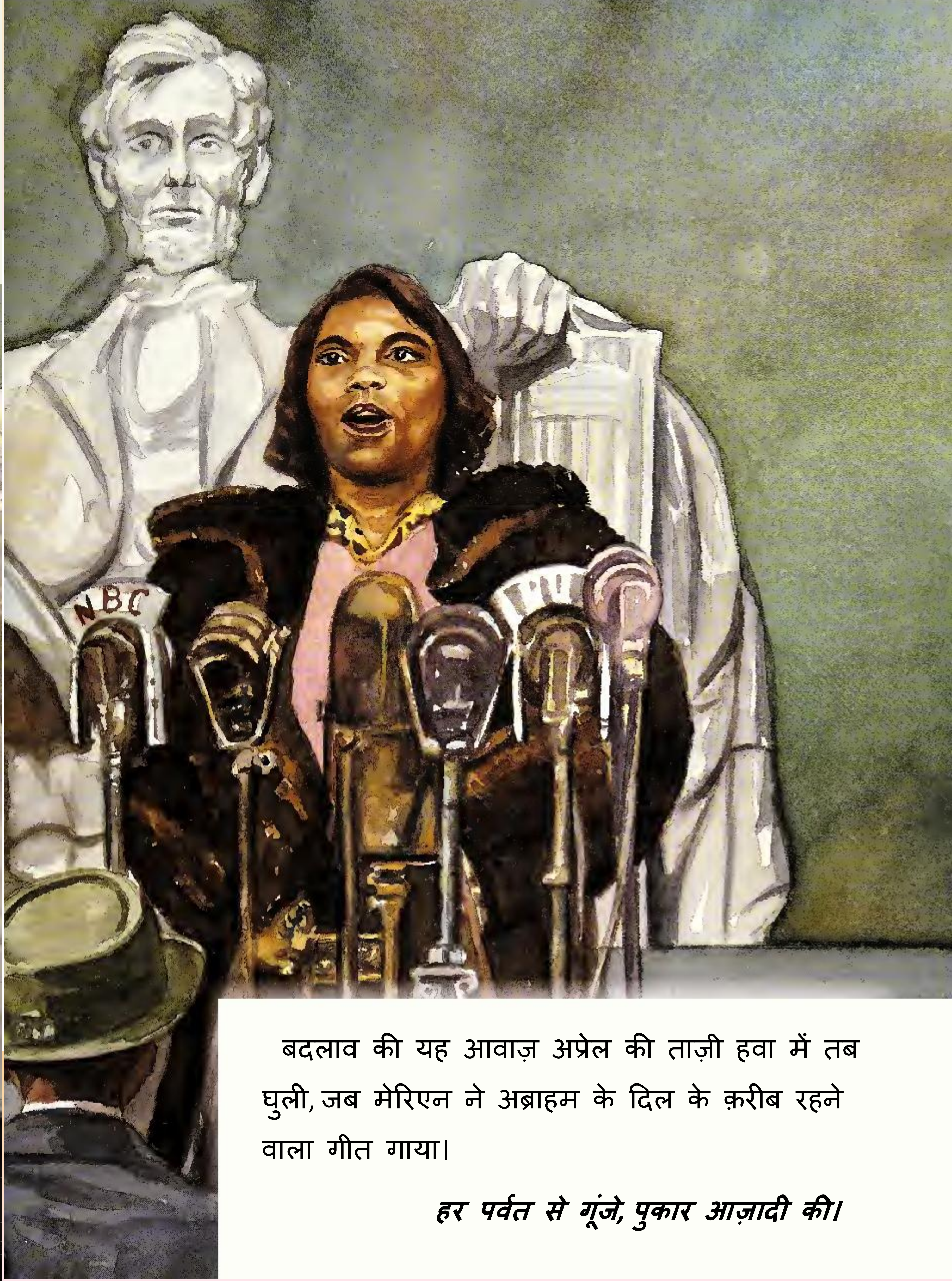


उस ईस्टर इतवार को जब मरिएन लिंकन स्मारक की सीढ़ियों पर खड़ी थीं, उनका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। जैसे ही मेरिएन ने गाना शुरु किया शोरगुल कर रही भीड़ बिलकुल चुप हो गई।

मेरी मातृभूमि, तुम ही तो हो, आज़ादी की प्यारी भूमि, गाते हैं हम तुम्हारे लिए।

वह भूमि जहाँ मरे पिता मेरे, हम तीर्थ-यात्रियों की गर्व की भूमि।





बदलाव की यह आवाज़ अप्रेल की ताज़ी हवा में तब घुली, जब मेरिएन ने अब्राहम के दिल के क़रीब रहने वाला गीत गाया।

हर पर्वत से गूंजे, पुकार आज़ादी की।



माइक्रोफोन की मदद से मेरिएन की बुलंद आवाज़ खचाखच भरे हुए लॉन के ऊपर से होती हुई, देश भर के लोगों की बैठकों में रखे रेडियो के माध्यम से उन तक पहुँची। जैसे-जैसे मेरिएन की आवाज़ ऊपर उठी, उसने देश भर के लोगों में एक नई समझ पैदा की - कौशल के उस स्तर का, व्यक्ति की चमड़ी के रंग से कोई लेना-देना नहीं है। जब गीत खत्म हुआ, लोगों ने करतल ध्वनि से वाहवाही की। कुछ तो खुशी से रो ही पड़े।

पर अमरीकी अब भी पृथक-पृथक थे - बसों में, रेस्त्रां में, यहाँ तक कि स्कूलों में भी। बदलाव आने में समय लगता है। बदलाव आता है

एक बार में एक छोटे कदम से।






साल है 1963।

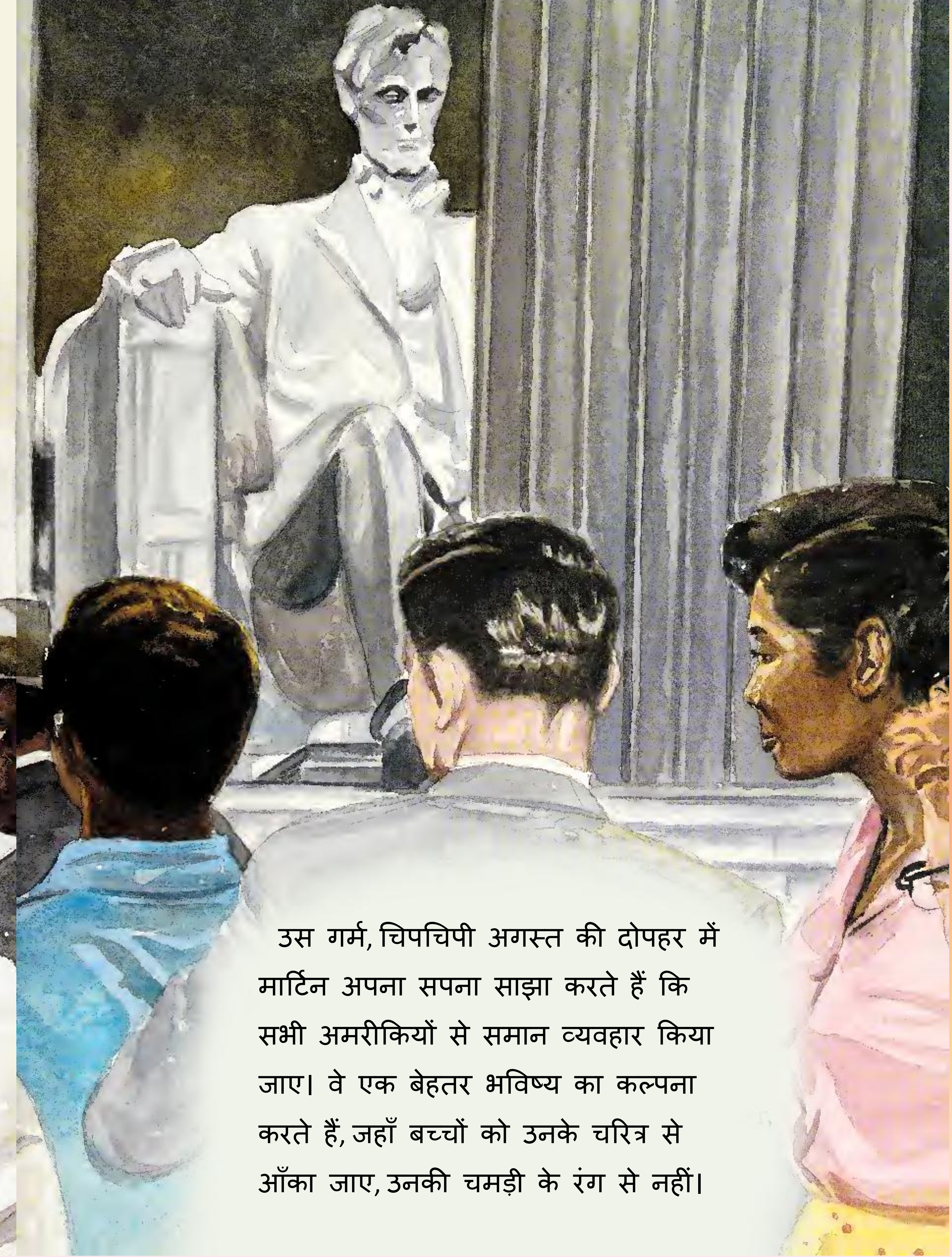
हर रंग के लोग बसों, रेलगाड़ियों, हवाई जहाज़ों से वॉशिंगटन डी.सी. पहुँचते हैं। दो लाख लोग मीलों पैदल चल, मशहूर वक्ता डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर को सुनने आते हैं।

चटर-पटर, बच्चे इकट्ठा होते हैं।

क्लिक-क्लिक, उनके पीछे स्त्रियाँ हैं।

धम-धम, पुरुष अब्राहम की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।





उस गर्म, चिपचिपी अगस्त की दोपहर में मार्टिन अपना सपना साझा करते हैं कि सभी अमरीकियों से समान व्यवहार किया जाए। वे एक बेहतर भविष्य का कल्पना करते हैं, जहाँ बच्चों को उनके चरित्र से आँका जाए, उनकी चमड़ी के रंग से नहीं।

मार्टिन का सपना लाखों टेलिविज़न सेटों से गूंजता है। लोग उस शान्त-गंभीर इन्सान को अपना सपना साझा करते सुनते हैं। वही सपना जो अब्राहम ने अपने दिल में संजोया था। मार्टिन के वक्तव्य ने समूचे देश को प्ररित किया। लोगों के दिमाग खुले। उनके नज़रिए बदले। लोग एकजुट हुए।







जल्द ही नए कानून बने और होटलों, रेस्त्रां व अन्य सार्वजनिक स्थानों में कालों को घुसने न देना गैर-कानूनी बन गया। किसी मकान को कोई भी खरीद या किराए पर ले सकता था। व्यावसायिक संघटन नस्ल के आधार पर यह तय नहीं कर सकते थे कि वे किसे नौकरी पर रखें, किस कार्मिक को कितना पैसा दें।

हालांकि कुछ लोगों को नए कानून पसन्द नहीं आए, ज़्यादातर अमरीकियों को यह अहसास होने लगा कि सभी लोगों के समान अधिकार होने चाहिए।



बदलाव धीरे-धीरे आया।

साल है 2009।

चटर-पटर, दो बच्चियाँ अब्राहम की सीढ़ियों पर दौड़ती हुई चढ़ती हैं। क्लिक-क्लिक, उनके पीछे है एक स्त्री। धम-धम, एक पुरुष धीमे-धीमे उन मशहूर सीढ़ियों पर चढ़ता है।

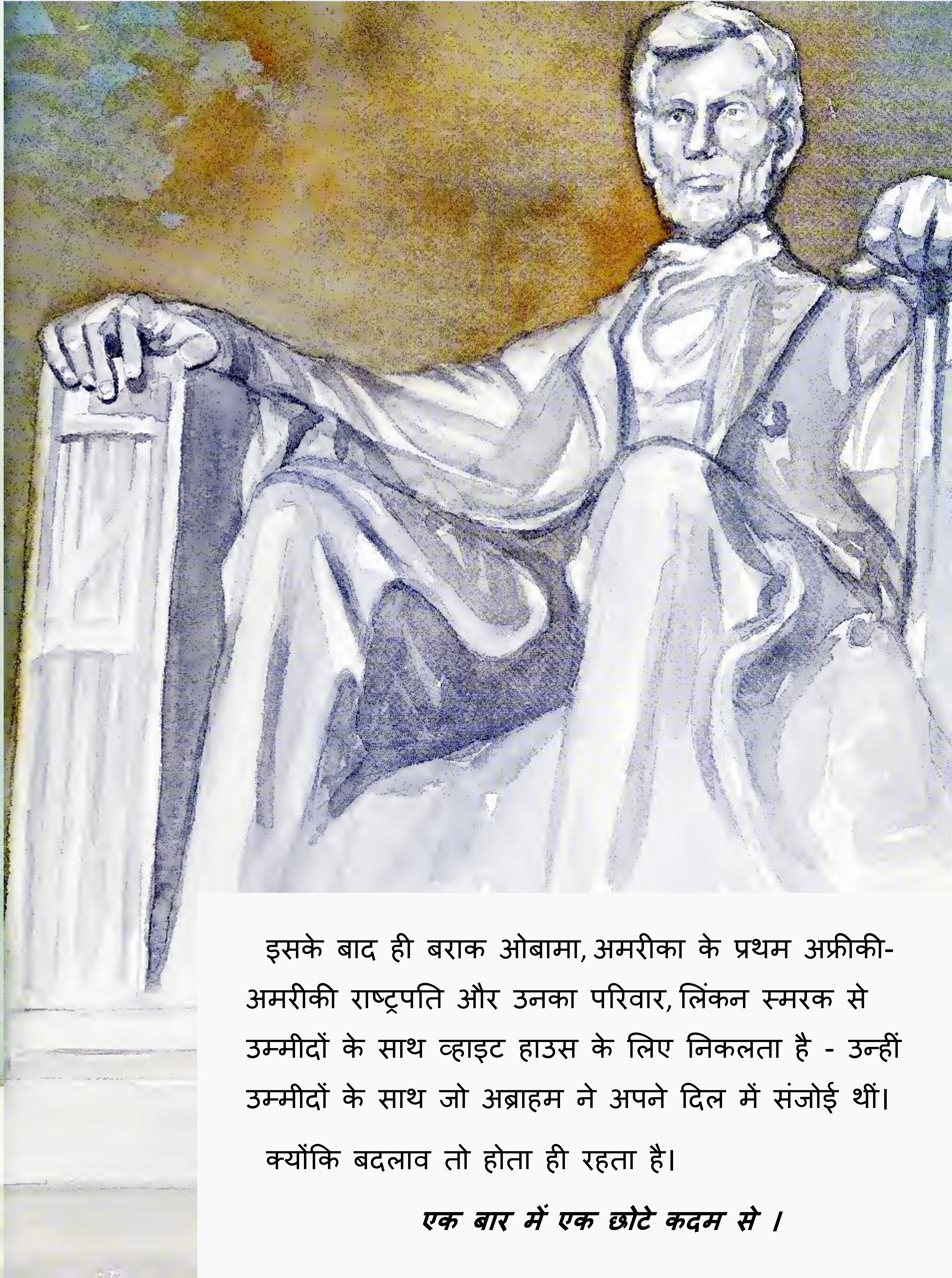


एक नया परिवार व्हाइट हाउस में रहने आने वाला है - उसी भवन में जहाँ किसी समय अब्राहम खुद रहते थे। यह परिवार लिंकन स्मारक में आया है।

बच्चियाँ उस विशाल प्रतिमा को देख सकते में हैं। उनका पिता अब्राहम के दृढ़ चेहरे को घूरता है। वह जानता है कि अमरीका ने अब्राहम के बाद लम्बी दूरी तय कर ली है, पर फिर भी बहुत काम करना बाकी है।

एक साथ खड़ा परिवार अमरीका के अब तक के लम्बे सफ़र को याद करता है। वे अपने से पहले आए लोगों को याद करते हैं, जिन्होंने साहस से आगे कदम बढ़ाए थे, ताकि बदलाव आ सके।





इसके बाद ही बराक ओबामा, अमरीका के प्रथम अफ्रीकी-अमरीकी राष्ट्रपति और उनका परिवार, लिंकन स्मरक से उम्मीदों के साथ व्हाइट हाउस के लिए निकलता है - उन्हीं उम्मीदों के साथ जो अब्राहम ने अपने दिल में संजोई थीं।

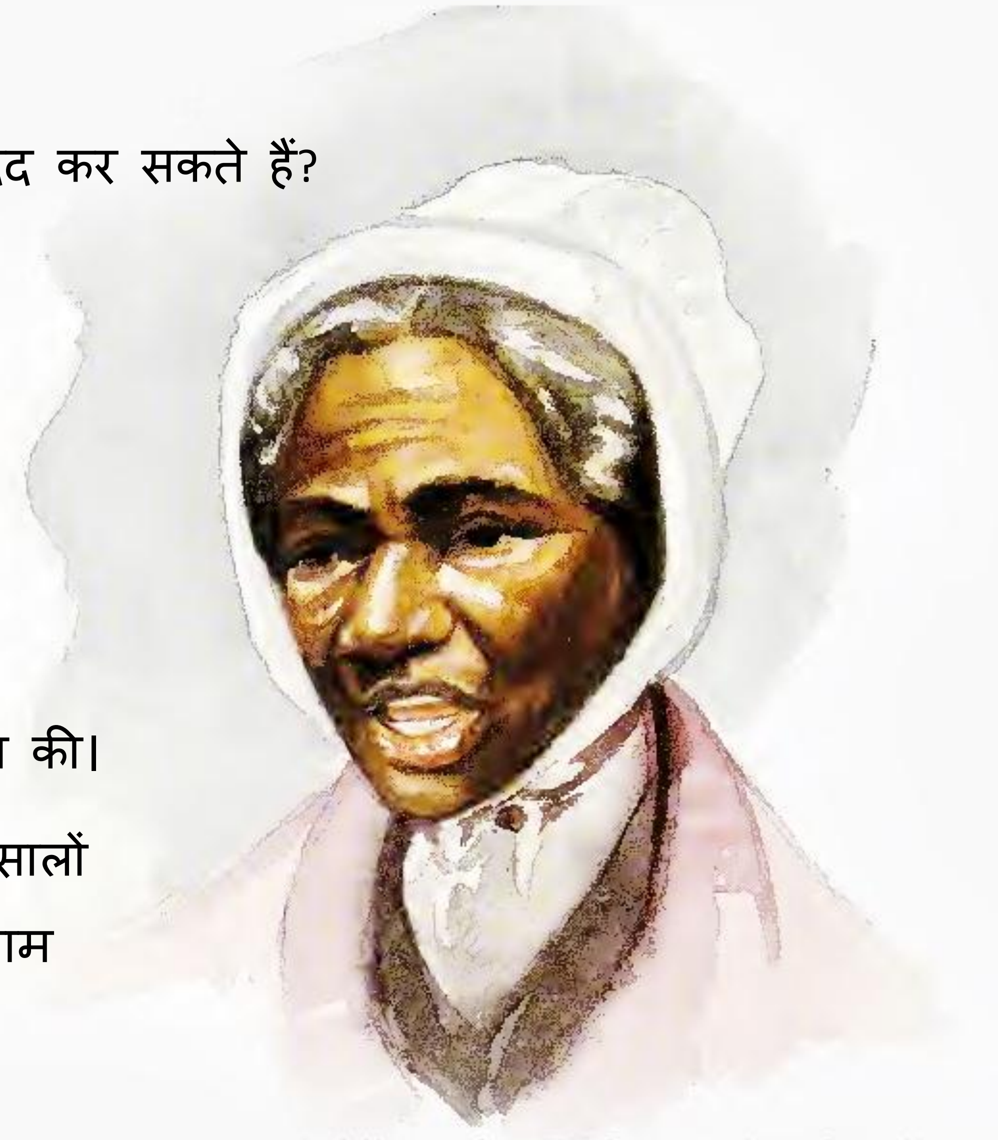
क्योंकि बदलाव तो होता ही रहता है।

एक बार में एक छोटे कदम से।

सीढ़ियाँ बदलाव की

लाखों दर्शक हर साल अब्राहम की प्रतिमा को देखने आते हैं। उस इन्सान को देखने जिसने बदलाव की प्रेरणा दी थी। अब्राहम ने जब 1863 में आज़ादी के घोषणा पत्र पर दस्तख़त किए, यह बदलाव की दिशा में एक बड़ा भारी कदम था। पर वे जानते थे कि असली समता और एकता लाने के लिए कई और लोगों को सामने आना पड़ेगा। अमरीका के इतिहास में कई साहसी व्यक्ति रहे हैं जिन्होंने बदलाव की दिशा में कदम उठाए। इन लोगों के मिले-जुले प्रयासों ने अमरीका को एक बेहतर और अधिक मज़बूत देश बनाया है।

क्या आप बदलाव लाने में मदद कर सकते हैं?



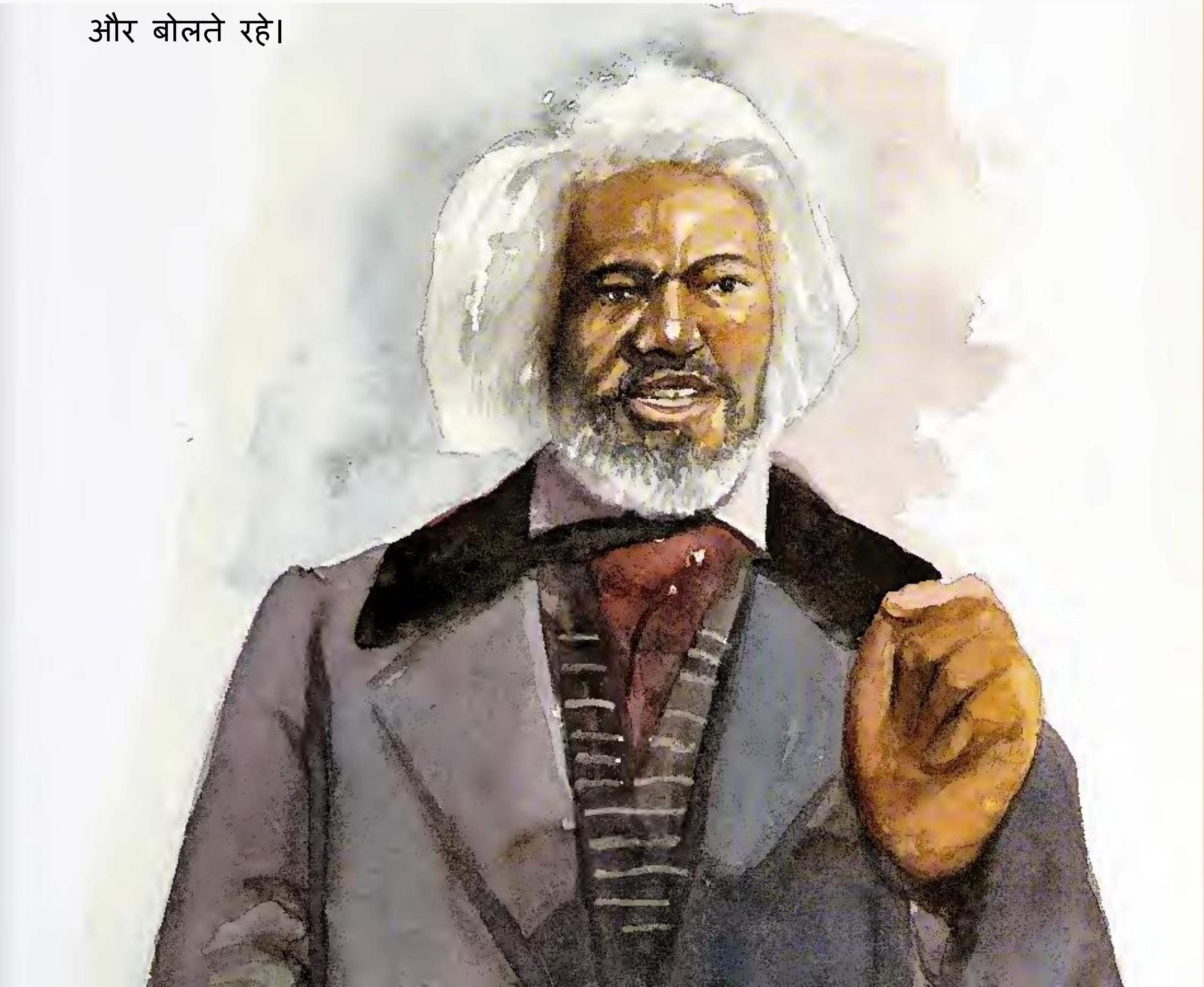
सोजर्नर ट्रूथ ने तक एक कदम उठाया, जब उन्होंने समता की बात की।

गुलामी से आज़ाद होने के कई सालों बाद इज़ाबैल बाउमफ्री ने अपना नाम बदल कर सोजर्नर ट्रूथ कर दिया।

'सोजर्नर' शब्द का मतलब होता है, 'मुसाफिर'। 1843 में वे अमरीका के एक से दूसरे छोर तक, लोगों को उस सच को सिखाने-बताने निकलीं, जिसे उन्होंने जिया था - यह सच कि सभी के साथ समान बरताव करना चाहिए। उनकी यात्राओं के दौरान ट्रूथ को गिरफ्तार किया गया, धमकाया और परेशान किया गया। पर वे कभी रुकी नहीं। वे जहाँ बोलती थीं कई लोग इकट्ठा हो जाते थे। 1864 में वे व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से मिलीं। उन्होंने चालीस वर्षों तक काले अमरीकियों व महिलाओं के लिए संघर्ष किया।

फ्रैडरिक डगलस ने तब एक कदम उठाया जब उन्होंने गुलामी के बारे में लिखना और बोलना आरंभ किया।

डगलस खुद एक गुलाम थे, और 1838 में एक जहाज़ में छिप कर भाग निकले थे। कुछ सालों बाद उन्होंने गुलामी की भयावहता के बारे में भाषण दिया। उनका भाषण इस कदर मर्मस्पर्शी था कि उन्हें सम्मेलनों और बैठकों में बुलाया जाने लगा। 1845 में उन्होंने गुलाम के रूप में अपने जीवन के बारे में एक पुस्तक प्रकाशित की। उनके सशक्त वर्णन ने गुलामी की त्रासदी, उसकी भयावहता को उजागर किया। इससे कई लोगों को यह विश्वास हो गया कि गुलामी की प्रथा कितनी गलत है। पर जो लोग गुलामी के समर्थक थे, वे बेहद नाराज़ हुए। उन्होंने डगलस को धमकाया। पर डगलस अड़े रहे। वे आगे भी गुलामी के विरुद्ध लिखते और बोलते रहे।





जैकी रॉबिनसन ने तब एक कदम उठाया जब उन्होंने अपनी टीम भावना दर्शाई।

जब 1947 में जैकी रॉबिनसन ने ब्रुकलिन डॉजर्स का न्यौता स्वीकारा और उस टीम में शामिल हुए। वे जानते थे कि पहला अफ्रीकी-अमरीकी बेसबॉल खिलाड़ी बनना आसान नहीं होगा। और वे सही थे - खेल देखने आए टीम के प्रशंसक उन पर खाना फेंकते और गन्दी गालियाँ बकते। होटल उन्हें कमरा देने से इन्कार करते। रेस्त्रां में उनको खाना नहीं परोसा जाता। पर रॉबिनसन ने धीरज से हर तरह का अपमान सहा, और अपना ध्यान भविष्य पर लगाए रखा। उन्होंने आत्म संयम अपनाया और नाराज़ हो अपनी प्रतिक्रिया नहीं दर्शाई। वे लगातार जी-जान लगा खेलते रहे। रॉबिनसन के चरित्र और दृढ़ता ने दुनिया को सिखाया कि हरेक को सम्मान पाने का अधिकार है।

रोज़ा **पार्कस्** ने तब एक कदम उठाया जब उन्होंने नस्ली अलगाववाद का विरोध किया।

1951 की 1 दिसम्बर को रोज़ा अपना काम कर बस से घर लौट रही थीं। बस में उन्होंने अपने नागरिक अधिकारों के बारे में एक कदम उठाया। अलबामा के शहर मौंटगामरी में पृथक्करण लागू था। सो जब बस चालक ने रोज़ा को आदेश दिया कि वह अपनी सीट एक गोरी सवारी को दे, पार्कस् ने नम्रता से उठने से इन्कार कर दिया। हालांकि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उनकी नौकरी छिन गई, रोज़ा के साहस ने मोंटगोमरी के अन्य कस्बों को विरोध करने की प्रेरणा दी और कालों ने बसों का बहिष्कार किया। यह बहिष्कार 1856 में तब खत्म हुआ जब अमरीका की सबसे बड़ी अदालत ने कहा कि अलबामा का कानून जो गोरों को बस में अलग बैठने की छूट देता है संविधान के विरुद्ध है। अदालत की इस जीत ने नागरिक अधिकारों पर ध्यान आकर्षित किया।

पार्कस् ने बाद में डॉ. मार्टिन लूथर किंग जैसे नागरिक अधिकारों के नेताओं के साथ काम किया। उनके साहसिक कदम ने अमरीकियों को अहसास दिलाया कि नस्ली अलगाववाद गलत है।



कालक्रम

1838 **फ़्रैडरिक डगलस** गुलामी से बच कर भागे। वे एक लेखक, वक्ता और नागरिक अधिकारों के नेता बने।

1863 **अब्राहम लिंकन** ने आज़ादी के घोषणा पत्र पर दस्तख़त किए।

1864 **सोजर्नर ट्रूथ** व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति लिंकन से मिलीं।

1922 लिंकन स्मारक पूरा हुआ। हैनरी बेकन ने उस भव्य इमारत का डिज़ाइन बनाया और मूर्तिकार डैनियल चैस्टर फ़्रैंच ने पिसिरिली परिवार के छह उस्ताद उकेरने वालों की मदद से लिंकन की प्रतिमा बनाई।

1939 **मेरिएन एन्डरसन** ने लिंकन स्मारक पर गायन किया। उन्होंने 'पिलग्रिम्स् प्राइड' गीत के शब्द बदल कर यह संदेश दिया कि बंघनों से मुक्त और स्वतंत्र होने का अधिकार सबको है।

1947 **जैकी रॉबिनसन** ब्रुकलिन डॉजर्स की टीम में शामिल हुए। वे राष्ट्रीय बेसबॉल लीग में खेलने वाले पहले अफ़्रीकी-अमरीकी खिलाड़ी थे।

1955 **रोज़ा पार्कस्** अपने नागरिक अधिकारों पर अड़ीं और एक गोरी सवारी के लिए बस में अपनी सीट से नहीं उठीं।

1963 **मार्टिन लूथर किंग**, जूनियर ने लिंकन स्मारक पर अपना मशहूर "मेरा एक सपना है" भाषण दिया।

1975 **अर्थर ऐश**, इंगलैण्ड में आयोजित विम्बलडन टैनिस की पुरुषों की एकल प्रतियोगिता जीते। उस वर्ष उन्हें विश्व का श्रेष्ठतम टैनिस खिलाड़ी घोषित किया गया।

1977 **एंड्रू यंग** पहले अफ़्रीकी-अमरीकी थे जिन्हें अमरीका ने संयुक्त राष्ट्र संघ का राष्ट्रदूत बनाया।

1983 **ओपरा विनफ़्री** अमरीका की पहली अफ़्रीकी-अमरीकी स्त्री थीं जो टी.वी. की होस्ट बनीं।

1992 **में जेमिसन** पहली अफ़्रीकी-अमरीकी थीं जो अंतरिक्ष यात्री बनीं।

1993 **टोनी मॉरिसन** पहली अफ़्रीकी-अमरीकी लेखिका थीं जिन्हें नोबेल पुरस्कार से नवाज़ा गया।

2001 **कॉलिन पॉवल** पहले अफ़्रीकी-अमरीकी थे जिन्हें अमरीका का राज्य सचिव बनाया गया।

2005 **कॉन्डोलोज़ा राइस** पहली अफ़्रीकी-अमरीकी महिला थीं जिन्हें अमरीका का राज्य सचिव बनाया गया।

2009 **बराक ओबामा** पहले अफ़्रीकी-अमरीकी थे जिन्हें राष्ट्रपति पद की शपथ दिलवाई गई।

